

“भारतीय राष्ट्रवाद तथा दीनदयाल उपाध्याय की भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा”

Dheeraj Kumar<sup>1</sup>

<sup>1</sup>B.N Mandal University, Madhepura, Bihar

Email: [dheerajkabvp@gmail.com](mailto:dheerajkabvp@gmail.com)

**सारांश:** पिछले एक शताब्दी में भारत में राष्ट्रवाद के अर्थ और उसके सार्वजनिक स्वरूप में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं। भारतीय राष्ट्रवाद औपनिवेशिक शासन से मुक्ति हेतु चले स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उभरा और यह एक प्रकार का *भौगोलिक (Territorial) राष्ट्रवाद* है, जो भारत की विविध भाषायी, धार्मिक और जातीय समुदायों को समाहित करता है। किंतु उस समय की राजनीतिक परिस्थिति में इस बात पर सहमति नहीं थी कि औपनिवेशिक शासन की समाप्ति के बाद राष्ट्र-राज्य किस स्वरूप में गठित हो और वह किस प्रकार के संविधान द्वारा संचालित हो, विशेषकर धर्मनिरपेक्षता को लेकर गहन मतभेद थे। सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sphere) में विभिन्न धार्मिक एवं जाति-आधारित दृष्टिकोणों की प्रभावशाली उपस्थिति ने इस असहमति को और प्रबल किया। यह शोधपत्र राष्ट्रवाद की वैश्विक अवधारणा का संक्षिप्त विश्लेषण प्रस्तुत करता है, भारतीय राष्ट्रवाद के ऐतिहासिक विकास की पृष्ठभूमि को रेखांकित करता है तथा अंततः दीनदयाल उपाध्याय की *समग्र मानववाद (Integral Humanism)* की दार्शनिक दृष्टि में भारतीय राष्ट्रवाद की व्याख्या करने का प्रयास करता है, विशेष रूप से *चित्ति* और *धर्म* जैसे उनके मौलिक अवधारणाओं पर केंद्रित होकर।

[Suman, S.K. **भाजपा प्रणाली के अंतर्गत नए पेचीदा गठबंधनबिहार का परिप्रेक्ष्य** :”. *The International Journal of Interpretation, Observation and Analysis*, 2025; Volume 3, Issue 1:303-309 (July-September). ISSN 2349-0713, Peer-reviewed (online/offline), Refereed, Indexed and International Journal (Since 2013), Global Impact Factor: 5.776

**प्रमुख शब्द:** राष्ट्र-राज्य, राष्ट्रवाद, भारतीय राष्ट्रवाद, हिंदू राष्ट्रवाद, दीनदयाल उपाध्याय, समग्र मानववाद, चित्ति, धर्म

**प्रस्तावना:** राष्ट्रवाद एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसकी व्याख्या विभिन्न कालखंडों में भिन्न-भिन्न विचारकों द्वारा की गई है। यह कभी राज्य की आधिकारिक विचारधारा के रूप में सामने आता है, तो कभी एक जन-आधारित आंदोलन के रूप में, जो क्षेत्रीय, नागरिक, जातीय, सांस्कृतिक, भाषायी, धार्मिक अथवा वैचारिक आयामों में प्रकट हो सकता है। इन आयामों का उपयोग राष्ट्रवाद के विभिन्न स्वरूपों को वर्गीकृत करने हेतु किया जाता है, यद्यपि व्यवहार में ये वर्गीकरण परस्पर पृथक न होकर अक्सर एक-दूसरे से मिश्रित रूप में विद्यमान रहते हैं। साथ ही, राष्ट्रवादी समूहों को उनके आकार, भौगोलिक स्थिति और वैचारिक प्रवृत्तियों के आधार पर भी पहचाना जा सकता है।

विश्व स्तर पर राष्ट्रवाद की बौद्धिक परंपरा में यूरोपीय चिंतकों जैसे योहान गॉटफ्राइड हर्डर (1744–1803) और मार्क्स गार्वी (1887–1940) से लेकर भारतीय विचारकों महात्मा गांधी और दीनदयाल उपाध्याय तक ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन चिंतकों की व्याख्याएँ इस तथ्य को स्पष्ट करती हैं कि राष्ट्रवाद का स्वरूप उदारवादी, परंपरावादी, उपनिवेशोत्तर या धार्मिक भी हो सकता है और यह अपने-अपने सांस्कृतिक तथा राजनीतिक संदर्भ के अनुरूप ढलता है। इस परिप्रेक्ष्य में भारतीय राष्ट्रवाद एक विशिष्ट उदाहरण के रूप में उभरता है—जहाँ स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान इसका स्वरूप समावेशी और क्षेत्रीय एकता पर आधारित रहा, वहीं स्वतंत्रता-उत्तर काल में धर्मनिरपेक्षता, धर्म, जाति और सांस्कृतिक पहचान को लेकर गहन विमर्श तथा विवाद इसके विकास की दिशा को प्रभावित करते रहे हैं।

### 1. राष्ट्रवाद का वैश्विक परिप्रेक्ष्य

राष्ट्रवाद एक आधुनिक राजनीतिक-सामाजिक विचारधारा है, जिसकी जड़ें अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी की यूरोपीय राजनीतिक परिवर्तनों से जुड़ी हुई हैं। यह अवधारणा विशेष रूप से *फ्रांसीसी क्रांति (1789)* और *औद्योगिक क्रांति* के बाद अधिक स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आई। इन क्रांतियों ने राजनीतिक सत्ता के स्वरूप, नागरिक अधिकारों और सांस्कृतिक पहचान की अवधारणा को गहराई से प्रभावित किया।

विश्व इतिहास में राष्ट्रवाद का विकास कई चरणों में देखा जा सकता है:

#### 1. प्रारंभिक यूरोपीय राष्ट्रवाद (18वीं–19वीं शताब्दी):

इस चरण में राष्ट्रवाद मुख्यतः *सांस्कृतिक* और *भाषायी* आधार पर उभरा। योहान गॉटफ्राइड हर्डर जैसे जर्मन दार्शनिकों ने भाषा और लोक-संस्कृति को राष्ट्रीय पहचान का मूल तत्व माना। जर्मनी और इटली के एकीकरण आंदोलनों ने यह स्पष्ट किया कि साझा सांस्कृतिक और भाषायी चेतना राजनीतिक एकता की नींव रख सकती है।

#### 2. औपनिवेशिक विरोधी राष्ट्रवाद (19वीं–20वीं शताब्दी):

यूरोपीय राष्ट्रवाद का प्रभाव एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के उपनिवेशों तक पहुँचा। इन क्षेत्रों में राष्ट्रवाद औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध स्वतंत्रता आंदोलनों का आधार बना।

भारत, वियतनाम, मिस्र और घाना जैसे देशों ने राष्ट्रवाद को स्वतंत्रता संघर्ष की वैचारिक धुरी के रूप में अपनाया।

3. **20वीं शताब्दी का राष्ट्रवाद और विश्वयुद्ध:**  
प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध में राष्ट्रवाद की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। एक ओर यह स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय (Self-Determination) का प्रतीक बना, तो दूसरी ओर चरम राष्ट्रवाद ने फासीवाद और नाज़ीवाद जैसे विनाशकारी राजनीतिक रूप ग्रहण किए।
4. **समकालीन वैश्विक संदर्भ (21वीं शताब्दी):**  
आज राष्ट्रवाद की परिभाषा और स्वरूप और भी जटिल हो चुके हैं। वैश्वीकरण, प्रवासन, बहुसांस्कृतिक समाज और डिजिटल तकनीक के प्रभाव से राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक या भौगोलिक पहचान तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, धार्मिक राष्ट्रवाद और लोकलुभावन राष्ट्रवाद जैसी विविध अभिव्यक्तियों में प्रकट हो रहा है। उदाहरणस्वरूप—अमेरिका में “अमेरिका फर्स्ट” नीति, ब्रिटेन का ब्रेक्सिट, यूरोप में दक्षिणपंथी दलों का उदय और एशिया में धार्मिक-सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का पुनरुत्थान।

स्पष्ट है कि राष्ट्रवाद का वैश्विक परिप्रेक्ष्य बहुआयामी और गतिशील है। यह कभी एकता और स्वतंत्रता का आधार बनता है तो कभी विभाजन और संघर्ष का कारक भी सिद्ध होता है।

## 2. भारतीय राष्ट्रवाद का ऐतिहासिक विकास

भारतीय राष्ट्रवाद का स्वरूप यूरोपीय राष्ट्रवाद से भिन्न और अधिक जटिल रहा है। इसका कारण भारत की भाषायी, धार्मिक, जातीय और सांस्कृतिक विविधता है। जहाँ यूरोप में राष्ट्रवाद प्रायः एक भाषा और संस्कृति पर आधारित था, वहीं भारत में यह विभिन्नताओं के भीतर एकता की खोज पर आधारित रहा। भारतीय राष्ट्रवाद का विकास कई चरणों में समझा जा सकता है:

### (क) प्रारंभिक चरण: औपनिवेशिक शासन और बौद्धिक जागरण (18वीं-19वीं शताब्दी)

अंग्रेजी औपनिवेशिक शासन ने भारत की सामाजिक-आर्थिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया। अंग्रेजी शिक्षा, प्रिंट संस्कृति, प्रेस और आधुनिक संचार साधनों ने एक साझा राजनीतिक चेतना के निर्माण में योगदान दिया। राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती और स्वामी विवेकानंद जैसे सुधारकों ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और सामाजिक सुधार की नींव रखी।

### (ख) कांग्रेस और मध्यमार्गी राष्ट्रवाद (1885-1905)

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885) के साथ भारतीय राष्ट्रवाद को संगठित स्वरूप मिला। प्रारंभिक कांग्रेस नेता (दादाभाई नौरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले,

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी) संवैधानिक सुधारों और शांतिपूर्ण याचिका के माध्यम से औपनिवेशिक शासन में भारतीय भागीदारी की मांग कर रहे थे। इस चरण को मध्यमार्गी राष्ट्रवाद कहा जाता है।

### (ग) उग्र राष्ट्रवाद और स्वदेशी आंदोलन (1905-1919)

बंगाल विभाजन (1905) ने भारतीय राष्ट्रवाद को नई ऊर्जा दी। बाल गंगाधर तिलक, बिपिनचंद्र पाल और लाला लाजपत राय जैसे नेताओं ने उग्र राष्ट्रवाद का स्वरूप दिया, जिसमें स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा पर जोर दिया गया। इस दौर में सांस्कृतिक चेतना और आत्मनिर्भरता की भावना राष्ट्रवाद की धुरी बनी।

### (घ) गांधी युग और जन-आधारित राष्ट्रवाद (1919-1947)

महात्मा गांधी के आगमन ने भारतीय राष्ट्रवाद को जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान किया। असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन ने राष्ट्रवाद को व्यापक जनभागीदारी से जोड़ा। गांधी का राष्ट्रवाद सत्याग्रह, अहिंसा, ग्राम स्वराज और धर्मनिरपेक्ष समावेशिता पर आधारित था।

### (ङ) विभाजन और स्वतंत्रता (1947)

भारतीय राष्ट्रवाद का चरमोत्कर्ष स्वतंत्रता के रूप में सामने आया, किंतु इसके साथ ही भारत का विभाजन हुआ, जिसने यह स्पष्ट किया कि धार्मिक पहचान पर आधारित राजनीति राष्ट्रवाद को विभाजित भी कर सकती है।

### (च) स्वतंत्रता-उत्तर भारतीय राष्ट्रवाद (1947-वर्तमान)

स्वतंत्रता के बाद भारतीय राष्ट्रवाद ने धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और समाजवादी स्वरूप अपनाया, जिसका प्रतिरूप भारतीय संविधान में दिखाई देता है। हालांकि, समय के साथ इसमें विभिन्न प्रवृत्तियाँ विकसित हुईं:

- **धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रवाद:** नेहरू और कांग्रेस परंपरा के नेतृत्व में।
- **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद:** दीनदयाल उपाध्याय और जनसंघ/भाजपा परंपरा के माध्यम से।
- **क्षेत्रीय राष्ट्रवाद:** आंध्र, पंजाब, असम, तमिलनाडु जैसे राज्यों में क्षेत्रीय अस्मिता के आंदोलनों के रूप में।
- **समकालीन राष्ट्रवाद:** वैश्वीकरण, आर्थिक उदारीकरण और डिजिटल संचार ने राष्ट्रवाद को लोकलुभावन राजनीति और धार्मिक-सांस्कृतिक विमर्श से जोड़ा है।

इस प्रकार, भारतीय राष्ट्रवाद का विकास न केवल औपनिवेशिक विरोध से प्रेरित रहा, बल्कि यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण, जन-आधारित आंदोलनों और संवैधानिक राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया का सम्मिलित परिणाम है।

### 3. दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्रवाद संबंधी दृष्टिकोण

दीनदयाल उपाध्याय (1916-1968) भारतीय जनसंघ के प्रमुख विचारक और प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक थे। उन्होंने

भारतीय राष्ट्रवाद को पश्चिमी विचारधाराओं से भिन्न, भारतीय संस्कृति और दर्शन की जड़ों से पोषित रूप में परिभाषित किया। उनके अनुसार राष्ट्रवाद केवल राजनीतिक संकल्पना नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से जुड़ा हुआ है। उनका राष्ट्रवाद समग्र मानववाद (Integral Humanism) की अवधारणा पर आधारित है।

#### (क) राष्ट्र की परिभाषा

दीनदयाल उपाध्याय ने राष्ट्र को मात्र भौगोलिक इकाई नहीं माना। उनके अनुसार राष्ट्र चार घटकों से निर्मित होता है:

1. भूमि (Territory)
2. जन (People)
3. संस्कृति (Culture)
4. इतिहास की साझा चेतना (Shared Consciousness of History)

उनके विचार में जब कोई समाज चित्ति (राष्ट्रीय आत्मा) को पहचान लेता है, तभी वह वास्तविक अर्थों में राष्ट्र कहलाता है।

#### (ख) चित्ति और राष्ट्रीय पहचान

उपाध्याय का मानना था कि प्रत्येक समाज की एक विशेष चित्ति (Chiti) होती है, जो उसकी सांस्कृतिक आत्मा को व्यक्त करती है। यह चित्ति ही राष्ट्र का मार्गदर्शन करती है और राष्ट्र की जीवनशक्ति का स्रोत होती है। भारत की चित्ति वैदिक संस्कृति, धर्म और दर्शन में निहित है। इस आधार पर उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को पश्चिमी राष्ट्रवाद से अलग माना।

#### (ग) धर्म और राष्ट्रवाद

उपाध्याय ने धर्म को राष्ट्र का आधार माना। यहाँ धर्म का अर्थ किसी विशेष पंथ से नहीं, बल्कि सार्वभौमिक नैतिक व्यवस्था (Cosmic Order) से है। उनके अनुसार धर्म मनुष्य और समाज को उनके कर्तव्यों का बोध कराता है और उन्हें संतुलन तथा मर्यादा में रखता है। भारतीय राष्ट्रवाद तभी पूर्ण है जब वह धर्मनिष्ठ हो।

#### (घ) समग्र मानववाद (Integral Humanism)

1965 में प्रस्तुत समग्र मानववाद उपाध्याय की राष्ट्रवादी विचारधारा का केन्द्रीय तत्व है। इसके प्रमुख आयाम हैं:

- **समग्र दृष्टिकोण:** मनुष्य को केवल आर्थिक प्राणी न मानकर शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आयामों से देखना।
- **सांस्कृतिक स्वाधीनता:** भारतीय राष्ट्रवाद का आधार पश्चिमी भौतिकवाद नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और मूल्य होने चाहिए।
- **विकास का भारतीय मॉडल:** आर्थिक विकास का लक्ष्य केवल उत्पादन वृद्धि न होकर, समाज की समरसता और आत्मनिर्भरता होना चाहिए।
- **लोकमंगल का दृष्टिकोण:** राष्ट्रवाद का उद्देश्य समाज के प्रत्येक वर्ग का कल्याण हो, न कि केवल किसी विशेष समूह का।

#### (ङ) भारतीय राष्ट्रवाद की विशेषता

उपाध्याय ने कहा कि भारत का राष्ट्रवाद हिंदू सांस्कृतिक मूल्यों पर आधारित है, जो संकीर्ण नहीं बल्कि समावेशी और सार्वभौमिक हैं। उनका मानना था कि भारतीय राष्ट्रवाद का ध्येय विश्व बंधुत्व (Vasudhaiva Kutumbakam) की भावना को मूर्त रूप देना है।

**संक्षेप में,** दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्रवाद भारतीय संस्कृति की आत्मा, धर्म आधारित नैतिक व्यवस्था और समग्र मानववाद पर आधारित था। उन्होंने भारतीय राष्ट्रवाद को पश्चिमी राष्ट्रवाद की नकल न मानकर, भारतीय परंपरा और जीवन-दर्शन से उत्पन्न मौलिक विचारधारा के रूप में प्रतिपादित किया।

#### संस्कृति और दीनदयाल उपाध्याय के विचार

##### (क) संस्कृति की अवधारणा

भारतीय परंपरा में संस्कृति का अर्थ मात्र कला, साहित्य, भाषा या संगीत तक सीमित नहीं है। संस्कृति का व्यापक अर्थ है—समाज की जीवन-शैली, मूल्य-व्यवस्था, नैतिकता, आध्यात्मिक दृष्टि और ऐतिहासिक चेतना का समन्वय। दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, संस्कृति किसी राष्ट्र की आत्मा (Soul of the Nation) होती है। यदि संस्कृति जीवित है तो राष्ट्र भी जीवित रहता है; यदि संस्कृति नष्ट हो जाती है तो राष्ट्र अपनी पहचान खो देता है।

उन्होंने कहा—

“किसी राष्ट्र का आधार उसकी संस्कृति होती है। केवल राजनीतिक शक्ति या आर्थिक समृद्धि राष्ट्र की दीर्घजीविता की गारंटी नहीं दे सकती। राष्ट्र की पहचान उसकी संस्कृति और जीवन-दृष्टि से होती है।”

##### (ख) भारतीय संस्कृति और उसकी विशिष्टता

दीनदयाल उपाध्याय भारतीय संस्कृति को अद्वितीय और सार्वभौमिक मानते थे। उनके अनुसार भारतीय संस्कृति के कुछ मूल गुण हैं:

1. **समग्रता (Holism):** भारतीय संस्कृति जीवन को खंडों में नहीं बाँटती, बल्कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों का संतुलन करती है।
2. **धर्मनिष्ठता (Dharma-centricity):** यहाँ धर्म का अर्थ संकीर्ण पंथ से नहीं, बल्कि सार्वभौमिक नैतिक व्यवस्था से है, जो जीवन को दिशा देती है।
3. **समावेशिता (Inclusiveness):** भारत की संस्कृति विभिन्नताओं को नकारती नहीं, बल्कि उन्हें स्वीकार और आत्मसात करती है।
4. **विश्वबंधुत्व (Universal Brotherhood):** “वसुधैव कुटुम्बकम्” का आदर्श भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

##### (ग) उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय राष्ट्रवाद को पश्चिमी राजनीतिक राष्ट्रवाद से अलग बताते हुए सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की संकल्पना दी। उनके अनुसार—

- राष्ट्र केवल राजनीतिक या भौगोलिक इकाई नहीं है, बल्कि एक सांस्कृतिक जीवात्मा (Cultural Entity) है।
- भारत की राष्ट्रीय आत्मा उसकी संस्कृति और धर्म में निहित है।
- भारतीय राष्ट्रवाद की जड़ें वेदों, उपनिषदों और भारतीय दार्शनिक परंपरा में खोजी जानी चाहिए, न कि पश्चिमी उदारवाद या भौतिकवाद में।

#### (घ) चित्ति और संस्कृति

उपाध्याय ने कहा कि प्रत्येक समाज की एक चित्ति (National Soul/Consciousness) होती है। भारत की चित्ति उसकी संस्कृति में निहित है।

- यह चित्ति ही राष्ट्र को दिशा देती है।
- संस्कृति ही राष्ट्र की जीवनशक्ति है, जो उसकी राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज व्यवस्था को प्रभावित करती है।
- यदि राष्ट्र अपनी चित्ति और संस्कृति से विमुख हो जाता है, तो उसका पतन निश्चित है।

#### (ङ) आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता

आज जब वैश्वीकरण (Globalization) और उपभोक्तावाद (Consumerism) ने सांस्कृतिक पहचान को चुनौती दी है, उपाध्याय का विचार अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है।

- उन्होंने चेतावनी दी थी कि यदि भारत ने अपनी संस्कृति और जीवन-दृष्टि से कटकर केवल पश्चिमी भौतिकवाद को अपनाया, तो उसका राष्ट्रवाद खोखला और अल्पकालिक सिद्ध होगा।
- उनके समग्र मानववाद का मूल संदेश यही है कि भारत का विकास भारतीय संस्कृति और मूल्य प्रणाली के अनुरूप होना चाहिए।

**इतिहास की साझा चेतना और दीनदयाल उपाध्याय के विचार**

#### (क) साझा चेतना का अर्थ

दीनदयाल उपाध्याय के अनुसार, किसी राष्ट्र का अस्तित्व केवल भौगोलिक सीमा या राजनीतिक ढांचे पर नहीं टिका होता, बल्कि उसकी पहचान और स्थायित्व उस राष्ट्र की साझा ऐतिहासिक चेतना पर आधारित होता है।

- यह चेतना समाज को उसके अतीत से जोड़ती है।
- यह अतीत की गौरवशाली परंपराओं, संघर्षों और उपलब्धियों की स्मृति को वर्तमान और भविष्य की दिशा देने का कार्य करती है।
- साझा चेतना ही राष्ट्र की एकता और निरंतरता का आधार बनती है।

#### (ख) भारत और ऐतिहासिक चेतना

भारत की ऐतिहासिक चेतना उपाध्याय के अनुसार केवल राजनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अनुभव भी सम्मिलित हैं।

- वैदिक काल से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन तक, भारत का इतिहास विविध संघर्षों, त्याग, पुनर्जागरण और सांस्कृतिक उत्थान का इतिहास है।
- इस इतिहास की साझा स्मृति भारतीय समाज को यह अनुभव कराती है कि हम सब एक साझा सांस्कृतिक धारा के अंग हैं।

#### (ग) उपाध्याय का दृष्टिकोण

दीनदयाल उपाध्याय ने कहा कि भारत का राष्ट्रभाव (Nationhood) उसकी भूमि, जन, संस्कृति और इतिहास की साझा चेतना से निर्मित होता है। यदि किसी समाज को अपने इतिहास की निरंतरता का बोध न हो, तो वह राष्ट्र के रूप में कमजोर पड़ जाता है।

- उन्होंने इस चेतना को राष्ट्रीय आत्मा (Chiti) से जोड़ा।
- उनके अनुसार भारत की ऐतिहासिक चेतना ने ही यहाँ के लोगों को बार-बार आक्रमणों और विदेशी शासन के बावजूद राष्ट्रीय एकता की अनुभूति कराई।

#### (घ) साझा चेतना और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

दीनदयाल उपाध्याय के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद में साझा ऐतिहासिक चेतना केंद्रीय भूमिका निभाती है।

- यह चेतना भारतीय समाज को केवल अतीत की स्मृति नहीं देती, बल्कि उसे भविष्य के लिए दिशा भी प्रदान करती है।
- उदाहरणस्वरूप, रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य, बौद्ध और जैन परंपराएँ, भक्ति और सूफी आंदोलन, स्वतंत्रता संग्राम—ये सब हमारी साझा ऐतिहासिक चेतना का हिस्सा हैं।

#### (ङ) आधुनिक संदर्भ

आज जब वैश्वीकरण और क्षेत्रीय राजनीति के कारण समाज में विभाजन की प्रवृत्तियाँ उभरती हैं, उपाध्याय के विचार और भी प्रासंगिक हो जाते हैं। साझा ऐतिहासिक चेतना ही राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक आत्मविश्वास और राष्ट्रनिर्माण की आधारशिला है।

**4. साझा ऐतिहासिक चेतना और दीनदयाल उपाध्याय के विचार**

दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि किसी भी राष्ट्र के निर्माण और उसकी निरंतरता का आधार केवल भौगोलिक सीमा या राजनीतिक सत्ता नहीं होता, बल्कि उस समाज की साझा ऐतिहासिक चेतना (Shared Historical Consciousness) और सांस्कृतिक निरंतरता होती है।

उनके अनुसार भारत जैसे प्राचीन राष्ट्र की आत्मा उसकी इतिहास-चेतना में निहित है, जिसमें वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत, पुराण, और भारतीय दर्शन की समृद्ध परंपरा शामिल है। यह चेतना केवल अतीत का गौरवगान नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए मार्गदर्शक शक्ति है।

दीनदयाल उपाध्याय ने यह भी कहा कि जब तक समाज अपने इतिहास, परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ा रहेगा, तब तक राष्ट्र की पहचान और उसकी एकता बनी रहेगी। यदि यह साझा चेतना कमजोर हो जाती है तो समाज विखंडन की ओर बढ़ जाता है।

उनकी 'एकात्म मानववाद' की विचारधारा इसी साझा चेतना से प्रेरित है, जिसमें उन्होंने व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को एक अविभाज्य इकाई के रूप में देखा। उपाध्याय के अनुसार –

- भारत का इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं या शासकों की गाथा नहीं है, बल्कि यह धर्म, संस्कृति और समाज की यात्रा है।
- भारत की राष्ट्रियता (Nationality) का आधार चिति है – अर्थात् वह शाश्वत सांस्कृतिक चेतना जो हर पीढ़ी को जोड़ती है।
- भारतीय राष्ट्रवाद तभी जीवंत रहेगा जब हम अपने अतीत की चेतना को समझकर उसे आधुनिक संदर्भों में आत्मसात करेंगे।

इस प्रकार, दीनदयाल उपाध्याय के विचार में साझा ऐतिहासिक चेतना भारतीय राष्ट्रवाद की आत्मा है, जो न केवल सांस्कृतिक एकता का आधार है, बल्कि भारतीय समाज को उसकी विशिष्ट पहचान और दिशा प्रदान करती है।

#### 4. साझा ऐतिहासिक चेतना और दीनदयाल उपाध्याय के विचार (आलोचनात्मक दृष्टि से)

दीनदयाल उपाध्याय का मानना था कि भारतीय राष्ट्रवाद का मूल स्रोत केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि इतिहास और संस्कृति की साझा चेतना है। उनके अनुसार, भारतीय राष्ट्र की आत्मा उसकी चिति (सांस्कृतिक आत्मा) और धर्म (सांस्कृतिक आचार संहिता) में निहित है।

#### दीनदयाल उपाध्याय का दृष्टिकोण:

- उन्होंने कहा कि भारत की राष्ट्रियता पश्चिम की तरह केवल राजनीतिक संविदा (Political Contract) या सामाजिक अनुबंध पर आधारित नहीं है।
- भारत का राष्ट्रत्व अनादि कालीन सांस्कृतिक यात्रा पर आधारित है, जिसमें वेदों से लेकर आधुनिकता तक एक अखंड धारा प्रवाहित होती रही है।
- उनकी दृष्टि में साझा इतिहास केवल अतीत की स्मृतियाँ नहीं, बल्कि राष्ट्र को निरंतरता और दिशा देने वाला आधार है।

#### गांधी का दृष्टिकोण:

- महात्मा गांधी भारतीय राष्ट्रवाद को नैतिक और आध्यात्मिक चेतना पर आधारित मानते थे।
- गांधी का मानना था कि भारतीय इतिहास का साझा तत्व अहिंसा, सत्य और ग्राम-स्वराज की परंपरा है।

- गांधी के लिए इतिहास से अधिक महत्वपूर्ण नैतिक आदर्श और जनता की आत्मनिर्भरता थी।

#### नेहरू का दृष्टिकोण:

- जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रवाद को आधुनिक, वैज्ञानिक और प्रगतिशील चेतना से जोड़ते थे।
- वे भारत की साझा ऐतिहासिक चेतना को मान्यता देते हुए भी उसे बहुलतावादी (Pluralist) और धर्मनिरपेक्ष ढांचे में देखना चाहते थे।
- नेहरू के लिए भारतीयता का सार केवल अतीत की गौरवगाथा में नहीं, बल्कि आधुनिकता और लोकतंत्र को अपनाने में था।

#### आलोचनात्मक तुलना:

- जहाँ दीनदयाल उपाध्याय साझा चेतना को सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं से जोड़ते हैं, वहीं गांधी इसे नैतिक मूल्यों और ग्राम्य परंपरा से जोड़ते हैं, और नेहरू इसे आधुनिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से।
- उपाध्याय की अवधारणा भारतीय राष्ट्रवाद को अधिक संस्कृति-केंद्रित और आत्मनिष्ठ बनाती है, जबकि गांधी और नेहरू की दृष्टि इसे अधिक लोकतांत्रिक और सार्वभौमिक दिशा में ले जाती है।
- आलोचकों का मानना है कि दीनदयाल की साझा चेतना की परिकल्पना भारत की विविधता को कभी-कभी सांस्कृतिक एकरूपता की ओर मोड़ देती है, जबकि गांधी और नेहरू विविधता को ही भारतीयता का आधार मानते हैं।

#### 5. दीनदयाल उपाध्याय और भारतीय राष्ट्रवाद का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को समझने के लिए उन्हें भारत के अन्य प्रमुख राष्ट्रवादी चिंतकों जैसे महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू के साथ तुलना करना उपयोगी है। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय राष्ट्रवाद की धारा कितनी बहुआयामी रही है।

#### (दीनदयाल उपाध्याय का दृष्टिकोण)

- राष्ट्र का आधार चिति (सांस्कृतिक आत्मा) और धर्म (नैतिक-आध्यात्मिक आचार संहिता)।
- साझा चेतना का स्रोत: वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत और भारतीय दर्शन।
- पश्चिमी राष्ट्रवाद की राजनीतिक संविदा की अवधारणा को अस्वीकार करते हुए भारतीय राष्ट्रवाद को सांस्कृतिक और ऐतिहासिक निरंतरता से परिभाषित करना।
- उनका एकात्म मानववाद व्यक्ति, समाज और राष्ट्र को अविभाज्य मानता है।

#### (महात्मा गांधी का दृष्टिकोण)

- राष्ट्र का आधार नैतिकता, सत्य और अहिंसा।

- साझा चेतना का स्रोत: ग्राम्य परंपरा, आत्मनिर्भरता और आध्यात्मिकता।
- गांधी के लिए भारतीय राष्ट्रवाद जनता के नैतिक उत्थान और सामाजिक न्याय पर आधारित था।
- उन्होंने विविधता में एकता को सत्याग्रह और सहयोग के माध्यम से सशक्त किया।

**(गजवाहरलाल नेहरू का दृष्टिकोण (**

- राष्ट्र का आधार धर्मनिरपेक्षता, बहुलतावाद और वैज्ञानिक दृष्टिकोण।

- साझा चेतना का स्रोत: भारत की बहुसांस्कृतिक विरासत और आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्य।
- नेहरू का राष्ट्रवाद भारत को आधुनिक, औद्योगिक और प्रगतिशील राष्ट्र बनाने की आकांक्षा रखता था।
- उन्होंने इतिहास को गौरव के साथ जोड़ा, लेकिन उसे आधुनिकता और प्रौद्योगिकी की ओर मोड़ने का आग्रह किया।

**तुलनात्मक सारणी**

पहलू	दीनदयाल उपाध्याय	महात्मा गांधी	जवाहरलाल नेहरू
राष्ट्र का आधार	चिति और धर्म (सांस्कृतिक आत्मा)	सत्य, अहिंसा और ग्रामस्वराज-	धर्मनिरपेक्षता, बहुलतावाद, आधुनिकता
साझा चेतना	प्राचीन भारतीय संस्कृति व शास्त्र	नैतिकता और ग्राम्य परंपरा	बहुसांस्कृतिक विरासत और लोकतांत्रिक मूल्य
राष्ट्रीयता की दिशा	सांस्कृतिक एकात्मता	नैतिक पुनर्निर्माण	वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास
विशेष बल	सांस्कृतिक निरंतरता और एकात्म मानववाद	आत्मनिर्भरता और सत्याग्रह	आधुनिकता और प्रगतिशील सोच
आलोचना	विविधता को कभीकभी एकरूपता - की ओर मोड़ते हैं	आदर्शवादी और व्यावहारिक चुनौतियों से ग्रस्त	अत्यधिक पाश्चात्य प्रभाव और केंद्रीकरण की आलोचना

इस तुलना से स्पष्ट होता है कि दीनदयाल उपाध्याय का राष्ट्रवाद संस्कृति और ऐतिहासिक चेतना पर आधारित है, गांधी का राष्ट्रवाद नैतिकता और जन-सशक्तिकरण पर, जबकि नेहरू का राष्ट्रवाद आधुनिकता और बहुलतावाद पर केंद्रित है। तीनों दृष्टिकोणों का संगम ही भारतीय राष्ट्रवाद की जटिलता और समृद्धि को दर्शाता है।

**निष्कर्ष**

यद्यपि दीनदयाल उपाध्याय की राष्ट्रवाद की अवधारणा पर गोलवलकर का गहरा प्रभाव था, जिनके साथ उन्होंने निकटता से कार्य किया, फिर भी उपाध्याय ने अपने विचारों को अपेक्षाकृत मृदु और संयमित भाषा में व्यक्त किया, जिसके कारण वे अधिक व्यापक रूप से स्वीकार्य हुए। उनकी एकात्म मानववाद (Integral Humanism) की संकल्पना विश्वदृष्टि और स्थानीय संस्कृति व समाज की समझ का एक अद्वितीय समन्वय है, जो इसे एक प्रकार से धर्मनिरपेक्ष परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। यह एक रोचक विरोधाभास उत्पन्न करता है।

उनके अधिकांश दार्शनिक चिंतन का केंद्रबिंदु यह रहा कि भारतीय राष्ट्र क्या है और क्यों वह सुदृढ़ और एकीकृत नहीं हो सका। वे राष्ट्र की परिभाषा को केवल भौगोलिक इकाई के रूप में नहीं देखते, बल्कि मानते हैं कि जनता के स्वभाव में अपनी भूमि के प्रति असीम भक्ति और अपनत्व (My-ness) की भावना का होना आवश्यक है।

उपाध्याय ने इस विफलता का कारण नैतिक पतन में देखा—राजनीतिक भ्रष्टाचार, जनता में भारत को मजबूत और समृद्ध बनाने की इच्छा का अभाव, समाज का

अवनयन तथा स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेरित करने वाले आदर्शवाद का हास। उनका मानना था कि भारतीयों को यह भ्रम दिया गया कि केवल विदेशी शासन को हटाना ही स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए पर्याप्त है।

एकात्म मानववाद की विशेषता यह है कि उपाध्याय ने एक ओर जहाँ अपने विमर्श में 'हिंदू', 'हिंदुत्व' या 'हिंदुइज्म' जैसे शब्दों का प्रयोग करने से परहेज किया, वहीं दूसरी ओर उन्होंने धर्म और दार्शनिक अवधारणाओं को नए, धर्मनिरपेक्ष और सार्वभौमिक रूप में प्रस्तुत किया। यही कारण है कि उनकी अवधारणा एक सर्वमान्य रूप में सामने आई।

एकात्म मानववाद का मूल सिद्धांत है—व्यक्ति, समाज, विश्व और परम सत्ता की एकता। प्रत्येक व्यक्ति के पास विविध उत्तरदायित्व और कर्तव्यों का विस्तार होता है। समग्र मानववाद (Holistic Humanism) का सार यह है कि इन विविध पक्षों को एक दूसरे के साथ निरंतर संवाद और समन्वय में लाया जाए।

**संदर्भ**

- प्रोफेसर, पूर्व एशियाई अध्ययन केंद्र, अंतरराष्ट्रीय अध्ययन संकाय, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, भारत
- गैस, चैम (2003). *द लिमिट्स ऑफ नेशनलिज्म*. कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मैक्लीन, इयान एवं मैकमिलन, एलिस्टेयर (2009). *कंसाइस ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ पॉलिटिक्स*. तृतीय संस्करण, ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

(“उदारवाद सामान्यतः वह विश्वास है कि राजनीति का उद्देश्य व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा करना और विकल्प की स्वतंत्रता को अधिकतम करना है।” – पृ. ...)

• रोम की शासन-प्रणाली को गणतांत्रिक सरकार कहा जाता था। संस्थापकों ने पढ़ा कि गणतांत्रिक सरकार वह है जिसमें सत्ता जनता के हाथों में होती है; जनता अपने प्रतिनिधियों को चुनकर उन्हें शासन का अधिकार देती है; और ये प्रतिनिधि केवल कुछ लोगों के लिए नहीं, बल्कि समस्त नागरिकों के हितों के लिए कार्य करने के उत्तरदायी होते हैं।

• चैन, डेरी (2024). “द वेस्ट एंड द ईगल.” *मीडियम*. ऑनलाइन प्रकाशित, 1 मई 2024 को देखा गया। उपलब्ध: <https://derrychen.medium.com/the-west-and-the-eagle-b39cbfe8f8b7>

• हैमर्सले, रैचेल (2020). *रिपब्लिकनिज़्म: एन इंट्रोडक्शन*. कैम्ब्रिज, यूके: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।

9. स्ट्रेहले, क्रिस्टीन; काइम्लिका, विल (1999), *कॉस्मोपॉलिटनिज़्म, नेशन-स्टेट्स और अल्पसंख्यक राष्ट्रवाद: हालिया साहित्य की एक समालोचनात्मक समीक्षा*, *यूरोपियन जर्नल ऑफ़ फ़िलासॉफी*, 7 (1): 65–88।

10. चटर्जी, अंगना पी.; हैनसेन, थॉमस ब्लॉम; जेफ़ेलाँट, क्रिस्टोफ़ (अगस्त 2019), *मेजॉरिटेरियन स्टेट: हाउ हिंदू नेशनलिज़्म इज़ चेंजिंग इंडिया*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

11. कॉनिंगहैम, रॉबिन; यंग, रूथ (2015), *द आर्कियोलॉजी ऑफ़ साउथ एशिया: फ़्रॉम द इंडस टू अशोक*, 6500 ई.पू.–200 ई., कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 451–466।

12. आचार्य, शिव (2005), *नेशन, नेशनलिज़्म एंड सोशल स्ट्रक्चर इन एंशिअंट इंडिया*, सुन्दीप पब्लिकेशन, नई दिल्ली।

13. विलियम गूल्ड (2004), *हिंदू नेशनलिज़्म एंड द लैंग्वेज ऑफ़ पॉलिटिक्स इन लेट कॉलोनियल इंडिया*, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, पृ. 3।

14. बैज नाथ पुरी (1975), *हिस्ट्री ऑफ़ इंडियन एडमिनिस्ट्रेशन: मीडियवल पीरियड*, भारतीय विद्या भवन, पृ. 273।

15. ऐन एटलस एंड सर्वे ऑफ़ साउथ एशियन हिस्ट्री, एम.ई. शार्प, पृ. 54।

16. विद्युत चक्रवर्ती; भुवन कुमार झा (2019), *हिंदू नेशनलिज़्म इन इंडिया: आइडियोलॉजी एंड पॉलिटिक्स*, रूटलेज, पृ. 67।

17. भट्ट, चेतन (2001), *हिंदू नेशनलिज़्म: ओरिजिन्स, आइडियोलॉजी एंड मॉडर्न मिथ्स*, बर्ग पब्लिशर्स।

18. पीटर वान डेर वीर; हार्टमुट लेहमन (1999), *नेशन एंड रेलिजन: पर्सपेक्टिव्स ऑन यूरोप एंड एशिया*, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।

19. भट्ट, चेतन (2001)।

20. वही (Ibid.)।

21. गुप्ता, आर.एस.ए.के. (2021), *आर्ट एंड एस्थेटिक्स ऑफ़ मॉडर्न मिथोपोइया V2: लिटरेचर्स, मिथ्स एंड रिवीज़निज़्म वॉल्यूम 2*, विश्वनाथ कविराज संस्थान।

22. *हरिजन*, 2 जनवरी 1937।

23. *यंग इंडिया*, 19 सितम्बर 1929।

24. *हरिजन*, 19 अक्टूबर 1947।

25. एल्सेनहांस, एच.; उअइसा, आर.; टेट्रॉल्ट, एम.ए. (2016), *द ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ़ पॉलिटिसाइज़्ड रेलिजन: फ़्रॉम ज़ीलाट्स इंटू लीडर्स*, टेलर एंड फ़्रांसिस, पृ. 124। और शर्मा, जे.एन. (2003), *अल्टरनेटिव इकोनॉमिक्स: इकोनॉमिक्स ऑफ़ महात्मा गांधी एंड ग्लोबलाइज़ेशन*, दीप एंड दीप पब्लिकेशन, पृ. 134।

26. नारंगोआ, ली; क्लिब, आर.बी. (2003), *इम्पीरियल जापान एंड नेशनल आइडेंटिटीज़ इन एशिया, 1895–1945*, रूटलेज।

27. बोस, सिसिर; वेर्थ, अलेक्जेंडर; जोग, नारायण गोपाल; अय्यर, सुब्बियर अप्पादुरई (1996), *बीकन अक्रॉस एशिया: ए बायोग्राफी ऑफ़ सुभाष चंद्र बोस*, ओरिएंट ब्लैकस्वान।

28. चौधुरी, निराद सी. (1987), *थाय हैंड, ग्रेट एनार्क: इंडिया, 1921–1952*, चैट्टो एंड विंडस।

29. गॉर्डन, लियोनार्ड ए. (1990), *ब्रदर्स अगेंस्ट द राज: ए बायोग्राफी ऑफ़ इंडियन नेशनलिस्ट्स सरत एंड सुभाष चंद्र बोस*, कोलंबिया यूनिवर्सिटी प्रेस।

30. चितकारा, एम.जी. (1997), *हिंदुत्व*, एपीएच पब्लिशिंग।

31. शंकर गोपालकृष्णन (2009), *ए मास मूवमेंट अगेंस्ट डेमोक्रेसी: द थ्रेट ऑफ़ द संघ परिवार*, आकर बुक्स।

32. लाल, विनय (2003), *द हिस्ट्री ऑफ़ हिस्ट्री: पॉलिटिक्स एंड स्कॉलरशिप इन मॉडर्न इंडिया*, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।

33. सुरेश रामभाई (1954), *विनोबा एंड हिज़ मिशन*, अखिल भारत सर्व सेवा संघ।